Lecture Series No:- 67.

Online Class.
Date- 8/7/2020
Time- 10:00 - 10:00 SOA·A

TOPIC,

(1.) Locke.

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy.
B.A Part - I
Paper - II (H)
A.N.D. College Shahpur Patory, Samastipur.

Ans :->

John Locke का विश्व दर्शन अनुभववादी होते हुए भी कुछ Descartes के दर्शन से मिलता-जुलता है। इनके अनुसार जगत की रचना द्रव्यों से हुई जो कि शक्तियों, गुणों और क्रियाओं के आधार हैं। ये द्रव्य दो प्रकार के हैं: शरीर और आत्मा। ज्ञान के

सिद्धांत में Locke ने यह बतलाया है कि हमारे मूल सरल प्रत्यय हैं। एक इन्द्रिय अथवा अनेक इन्द्रियों के द्वारा बाह्य जगत से प्राप्त, ताप, ठोसपन इत्यादि। एक से अधिक

P.T.O

इन्द्रियों अथवा अनेक इन्द्रियों
के द्वारा बाह्य जगत से
प्राप्त है ताप, ठोसपन इत्यादि।
एक से अधिक इन्द्रियों
से प्राप्त होने वाले प्रत्यय हैं।

प्रसार, आकार और
गति। ये दोनों प्रकार के प्रत्यय
बाहर से आते हैं। इस प्रकार कोई न
मनुष्य के बाहर इनका
कोई आधार आवश्यक होना चाहिए।
इस प्रकार इन सरल प्रत्ययों
के आधार पर Locke जड़
तत्व की स्थापना करते हैं।

Locke ने जड़तत्व का पुद्गलों
में दो प्रकार के (गुणों) गुण बतलाये
हैं:—(1) प्राथमिक गुण और
(2) गौणगुण। प्राथमिक गुण भौतिक
पदार्थ में हैं। इनकी संख्या
छः है :→ ठोसपन, विस्तार,
आकार, गति, विश्राम या स्थिति
और संख्या। प्रधान गुण वस्तुनि-
ष्ठ हैं। गौण गुण प्राथमिक गुण etc.

END

Scanned with CamScanner